पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.7.2013 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

अन्तरंग सभा का अधिवेशन
25 अगस्त 2013

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी व अन्तरंग सभा की वार्षिक बैठक रविवार, 25 अगस्त 2013 को सायं 3 बजे आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली-110007 में होगी। सभी सभासद समय पर पंहुचे।

-महेन्द्र भाई, महामंत्री

वर्ष-30 अंक-04 श्रावण-2070 दयानन्दाब्द 190 16 जुलाई से 31 जुलाई 2013 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.7.2013, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

॥ ओ३म् ॥

यदि आप आर्य युवा शक्ति की कार्यप्रगति की एक झलक देखना चाहते हैं तो अवश्य पधारें।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

35वाँ वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन

रविवार, 1 सितम्बर 2013, प्रात: 9.00 से सांय 5.00 बजे तक

स्थान : योग निकेतन सभागार

30-ए, रोड न0-78, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-110026

विशेष आकर्षण

- ❖ राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर आर्य समाज का चिन्तन
- ❖ देश भर के चुने हुए आर्य युवा प्रतिनिधियों का भव्य समागम
- ❖ केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के भावी कार्यक्रमों पर विचार
- ❖ राष्ट्रीय कार्यकारिणी व प्रान्तीय अध्यक्षों का परिचय

यज्ञ : प्रात: 9 से 10 तक ● अल्पाहार 10 से 11 तक ● ऋषि लंगर 1 से 2 तक

आर्य समाज में उत्साह व जोश की एक नई लहर पैदा करने के लिए

आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

: निवेदक :

डॉ.अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	**महेन्द्र भाई** राष्ट्रीय महामन्त्री	**यशोवीर आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
दुर्गेश आर्य वरिष्ठ मंत्री	**सत्यभूषण आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**रामकुमार सिंह** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	**मनोहरलाल चावला** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**कृष्णचन्द पाहूजा** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
राकेश भटनागर राष्ट्रीय मन्त्री	**आनन्दप्रकाश आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**सन्तोष शास्त्री** राष्ट्रीय मन्त्री
गवेन्द्र शास्त्री बौद्धिकाध्यक्ष	**देवेन्द्र भगत** प्रैस सचिव	**प्रवीण आर्य** राष्ट्रीय मन्त्री

: स्वागत समिति :

स्वामी प्रणवानन्द जी	आनन्द चौहान
रामेश्वर गोयल	दर्शन अग्निहोत्री
विपिन रहेजा	चौ.ब्रह्मप्रकाश मान
मायाप्रकाश त्यागी	राजीवकुमार परम
डॉ.सुन्दरलाल कथुरिया	सुषमा सर्राफ
डॉ.वीरपाल विद्यालंकार	डॉ.डी.के.गर्ग
शशिभूषण मल्होत्रा	रवि चड्डा
कान्तिप्रकाश आर्य	मदनलाल आर्य
के. एल. पुरी	रामकृष्ण सतीजा
राजेन्द्र लाम्बा	जितेन्द्र डावर
नवीन रहेजा	सुरेन्द्र गुप्ता
सत्यानन्द आर्य	धर्मपाल सिब्बल
डॉ. ओमप्रकाश मान	बृजभूषण तायल

प्रबन्ध समिति : सर्वश्री योगेन्द्र शास्त्री, सौरभ गुप्ता, विश्वनाथ आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, सुरेश आर्य, ओमबीर सिंह, नीता खन्ना, प्रभा सेठी, अर्चना पुष्करणा, गायत्री मीना, कृष्णलाल राणा, जीवनप्रकाश शास्त्री, मायाराम शास्त्री, श्रीकृष्ण दहिया, रामकृष्ण शास्त्री, वेदप्रकाश शास्त्री, डॉ. मुकेश सुधीर, ईश आर्य, महेन्द्र बूटी, स्वतंत्र कुकरेजा, बलजीतसिंह आर्य, कृष्णप्रसाद कौटिल्य, सुभाष बब्बर, नरेन्द्र सुमन, रचना आहूजा, उर्मिला आर्या, अमरनाथ बत्रा, अजय जिंदल, नरेन्द्र कालरा, दुर्गाप्रसाद कालरा, ओमप्रकाश घई, प्रकाशवीर शास्त्री, नरेन्द्र गुप्ता, ओम सपरा, प्रकाशवीर बत्रा, हरिचन्द स्नेही, वी.के.आर्य

केन्द्रीय कार्यालय : **आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली-7** दूरभाष : 9810117464, 9013137070

E-mail : aryayouth@gmail.com. Website : www.aryayuvakparishad.com

join - http://www.facebook.com/group/aryayouth

मेरे पिता स्वतन्त्रता सेनानी, गुरूकुल भक्त स्वर्गीय लाला गोपाल राम

(मेरे गुरूकुल प्रवेश की कहानी और पिताजी का व्यक्तित्व)

लेखकः डा. रामनाथ वेदालंकार, 1/116, फूलबाग, पंतनगरन, (नैनीताल)

उस समय गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय गंगापार जंगल में था। वार्षिकोत्सव होते तो बड़ी धूम मचती थी। उत्सव पर रेलवे का कंसेशन टिकट भी मिलने लगा था। बड़ी श्रद्धा के साथ गुरूकुल-प्रेमी जनता मार्ग के रेत-पत्थरों की परवाह न कर कनखल से पैदल गुरूकुल जाती थी। 3-4 दिन का उत्सव श्रद्धालु लोगों का एक धार्मिक मेला होता था। पिता जी नियमपूर्वक गुरूकुल के उत्सव पर जाते थे। एक बार उत्सव से लौट कर मुझसे पूछने लगे, तू गुरूकुल पढ़ने जायेगा? वहां की बातें बताते हुए कहा कि वहां कसरत, तीर कमान के खेल, मोटर रोकना जंजीर तोड़ना आदि भी सिखाया जाता है। मेरे 'हां' कहने पर मानों मेरी परीक्षा लेने के लिए बोले--चौदह वर्ष तक घर आना नहीं मिलेगा। मेरा दिल तो टूटा, पर फिर भी मैंने इन्कार नहीं किया। उस समय मैं आर्यसमाज की पाठशाला में पढ़ता था, जो पिता जी तथा नगर के कुछ अन्य उत्साही लोगों के प्रयत्न से फरीदपुर में खोली गई थी। उस वर्ष गुरूकुल न भेजकर मुझे और मेरे बड़े भाई रामावतार को संस्कृत पढ़ने के लिए काशी भेज दिया। उन्होंने सोचा था कि काशी एक दो वर्ष पढ़कर इनकी संस्कृत की नींव पक्की हो जायेगी, फिर गुरूकुल भेज देगें। अगले वर्ष मेरे और मेरे बड़े भाई के लिए क्रमशः गुरूकुल कांगड़ी और महाविद्यालय ज्वालापुर से प्रवेश-फार्म मंगवा कर उन्हें भरकर डाक द्वारा भेज दिया पर गुरूकुल कांगड़ी से निषेध का उत्तर आ गया कि आपका बालक प्रविष्ट नहीं किया जा सकता, क्योंकि उसकी आयु 9 वर्ष की हो गई है, आठ वर्ष से अधिक आयु के बालक प्रविष्ट नहीं किये जाते हैं। पिता जी ने फिर भी हिम्मत नहीं हारी। उत्सव पर तो उन्हें जाना ही था। बरेली के डाक्टर श्यामस्वरूप कभी-कभी उत्सव पर भाषश देने जाते थे। पिता जी का उनसे अच्छा परिचय था। उनसे एक परिचय-पत्र लिखा कर पिता जी मुझे तथा मेरे बड़े भाई को लेकर हरिद्वार पहुंच गये। बड़े भाई को महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रविष्ट करा दिया।

गुरूकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता पं. विश्वम्भरनाथ जी नियम के बड़े पक्के थे। जब पिताजी मुझे लेकर उनके पास पहुंचे तो वे कहने लगे कि आपको मना लिख दिया था, फिर इस बालक को क्यों ले आये? इसका प्रवेश नहीं हो सकता है, इसे वापिस ले जाइये। डाक्टर श्यामस्वरूप का लिखा हुआ परिचय-पत्र भी कुछ काम न आया। उन्होंने लिखा था-इनका परिवार आर्यसमाज और गुरूकुल का भक्त है, बालक होनहार है, इसे अवश्य प्रविष्ट कर लिया जाय। गुरूकुल के मुख्य द्वार के ऊपर प्रबन्ध-समिति की बैठक होने वाली थी। पिता जी मुझे साथ लिये हुए बड़ी चिंतित मुद्रा में द्वार के समीप खड़े थे। इतने में भूतपूर्व सभा प्रधान श्री रामकृष्ण जी बैठक में सम्मिलित होने उधर आ निकले। उन्होंने देखा कि सादे वेश में एक भक्त टाइप का व्यक्ति बालक को लिये खड़ा है, चेहरे पर चिंता व्यक्त हो रही है, आंखें भरी हुई हैं। उन्होंने पिता जी से पूछा--आपको क्या किसी से मिलना है? सुनते ही पिता जी की आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। उन्होंने उन्हें बताया कि यह मेरा बालक है, संस्कृत पढ़ा है, 9 वर्ष की आयु हो जाने के कारश मुख्याधिष्ठाताजी ने इसे प्रविष्ट करने से मना कर दिया है। मैं यही सोच रहा हूं कि क्या इसे वापिस ही ले जाना पड़ेगा। रामकृष्ण जी पिता जी से प्रभावित हुए और बोले प्रवेश-फार्म मुझे दीजिए और यहीं थोड़ी देर प्रतीक्षा कीजिए। मीटिंग में मुख्याधिष्ठाता जी टस से मस नहीं हुए थे, अड़ गये कि इस बालक का प्रवेश नहीं हो सकता, मैं नियम को नहीं तोडूंगा। पर रामकृष्ण जी की वकालत काम आई और बहुसम्मति के आगे मुख्याधिष्ठाता जी झुक गये। पिता जी को अंदर बुलाकर प्रवेश का निर्णय बता दिया गया और कहा गया कि इसकी परीक्षा दिला दीजिए तथा डाक्टरी जांच करा लीजिए।

पिता जी मुझे प्रविष्ट करा कर मेरे बड़े भाई के पास महाविद्यालय ज्वालापुर आ गये और वहां का वार्षिकोत्सव देखने लगे। पीछे मेरा दिल टूटने लगा और मैं सिर मुंडाये, पीली गाती धोती पहने, बिना किसी से कहे चुपचाप नावों का कच्चा पुल पार कर कनखल पहुंच गया और वहां से रास्ता पूछते-पूछते पिता जी के पास महाविद्यालय ज्वालापुर जा पहुंचा। पिताजी मुझे देख हैरान हुए और मेरी इतनी तीव्र भर्त्सना की कि मैं समझ गया कि अब मैं घर वापिस नहीं जा सकता। तुरंत मुझे लेकर गुरूकुल पहुंचे आर अधिष्ठाता जी को सुपुर्द कर उसी समय लौट गये। पिता जी जहां भावुक और दयार्द्र थे, वहां सख्त भी बहुत थे।

उस समय बिना विशेष कारश के छुट्टियों में भी घर जाने की स्वीकृति नहीं मिलती थी। चार वर्ष तक मैं घर नहीं गया। पांचवें वर्ष जब मैंने देखा कि मेरे बहुत से साथी दीर्घावकाश में घर जा रहे हैं तब मैनें भी पिता जी को लिखा कि मुझे भी आकर ले जाइये। पिता जी आये तो उनसे कारण लिखकर देने को कहा गया कि क्यों बालक को घर ले जाना चाहते हैं। कार्यालय में पिता जी को पता चला कि जो बालक घर जा रहे हैं उनके घर पर या तो किसी की मृत्यु हो गई है या कोई निकट संबंधी मां, दादी, बाबा, चाचा, ताऊ , बहिन आदि असाध्य रोग से पीड़ित हैं। अन्यों की तरह पिता जी भी ऐसा कोई कारण बता सकते थे, पर इसके लिये वे तैयार नहीं हुए और बोले कि बालक को छुट्टी दिलाने की खातिर मैं असत्य बात नहीं कहूंगा। परिणामतः मुझे छुट्टी नहीं मिली। यह छोटी सी बात प्रतीत होती है, किन्तु इसमें पिताजी के चरित्र की एक बड़ी विशेषता पर प्रकाश पड़ता है। पिता जी उस समय स्कूल-मदरसों में चलने वाली शिक्षा के थोथेपन को देख आर्यसमाज की शिक्षा-संस्थाओं से ही प्रभावित थे। अतः अपनी दो पुत्रियों (शकुन्तला और शान्ति) को उन्होंने कन्या गुरूकुल हाथरस भेज दिया।

मोटा जुलहू खद्दर का मटियाला सा सादा कुर्ता, वैसी ही चार हाथ की ऊंची धोती, कंधे पर अंगोछा, नंगे सिर, पैरों में टायर की सादी सी चप्पलें या पैर भी नंगे, दयानन्द और आर्यसमाज के भक्त, स्वदुःख सहिष्णु, परदुःखकातर स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी, दृढ़-निश्चयी, सादा जीवन उच्च विचार के मूर्तरूप - यह था संक्षिप्त हुलिया मेरे पिता लाला गोपालराम जी का। जब स्वतन्त्रता सेनानियों को पेंशनें बांधी जा रही थीं तब आपके परिचितों ने आपको भी सरकार के पास आवेदनपत्र भेजने की सलाह दी। आपका उत्तर था कि मैंने किसी पुरस्कार की आशा से स्वतंत्रता संग्राम में भाग नहीं लिया था। अन्त तक पुरस्कार रूप में कोई वृति आपने सरकार से नहीं ली। बरेली में मुख्यमंत्री के हाथों से एक समारोह में स्वतन्त्रता-सेनानियों को जब ताम्रपत्र वितीर्श किये जाने वाले थे तब उस समारोह में भी आप मित्रें के बहुत आग्रह करने पर ही गये। उनकी धारशा थी कि इस तांबे के टुकड़े से आजादी के सिपाही का क्या सम्मान बढ़ता है।

अपने प्रारम्भिक जीवन में पिता जी फरीदपुर में कपड़े की छोटी सी दुकान करते थे। बरेली से थोड़ा-थोड़ा कपड़ा उधार ले आते थे, बिक जाने पर दाम चुका कर और ले आते। एक दिन थोक-विक्रेता ने पूंछा- 'आज कपड़ा कम क्यों ले रहे हैं?' बोले-आपने रूपयों का तकादा जो भेजा था। तकादा पसन्द नहीं है, जितना रूपया पास होगा उतना ही माल लेंगे। इस पर थोक-विक्रेता ने इन्हें खुली छूट दे दी और कहा-'आगे से कभी तकादा नहीं होगा, जितना चाहें आप माल ले जायें।' सन् 1920 में नागपुर में कांग्रेस ने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार का प्रस्ताव पारित किया। तब से पिता जी ने विदेशी कपड़ा न खरीदा, न बेचा। विदेशी माल न बेचने के कारण आपकी बड़ी प्रतिष्ठा होती थी।

सन् 1921 में पिता जी महात्मा गांधी की पुकार सुनकर अहमदाबाद की कांग्रेस में गये। साबरमती आश्रम भी देखा। तभी से उनकी विचारधारा कांग्रेसी हो गई और वे देश की स्वतंत्रा के पक्षधर हो गये। सन् 1922 में कलेक्टर द्वारा लगाई गई दंड 144 तोड़कर हजारों लोगों के साथ आप नकटिया ग्राम गये। घुड़सवार पुलिस द्वारा खदेड़े जाने पर बरेली आकर कुतुबखाने पर विशाल जलसा किया। 18 आदमियों सहित उन्हें गिरफ्तार करके 6 महीने की सजा सुना कर बरेली जेल भेज दिया गया। उस समय जेलों की दशा बहुत खराब थी। लोहे के बर्तन में मिर्च-तेल डाल कर पकाई हुई दाल और किरकिरी रोटी मिलती थी। रामबांस कूटना पड़ता था और पैरों में कंबलों की मलाई करनी पड़ती थी। उनके साथी सेठ दामोदर स्वरूप के पैर तो कंबल मलते मलते घायल हो गये थे। सन् 1941 में फिर सत्याग्रह करके जेल गये और 6 महीने की सजा काटी। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो' आंदोलन छिड़ने पर फिर उन्हें गिरफ्तार करके चौदह महीने बरेली की सेंट्रल जेल में रखा गया। उनके साथ गुरूकुल के वैदिक विद्वान पं. चन्द्रमशि विद्यालंकार भी थे। वहां पिता जी और उनके साथी सन्ध्या-हवन करते और सत्संग लगाते थे, अखाड़े में कुश्ती भी लड़ते थे। पिता जी से कुछ लोग जेल में उर्दू पढ़ते थे। उर्दू के उनके शिष्य एक पहाड़ी सज्जन ने उन्हें कहा कि जेल से छूटने पर गुरूदक्षिशा स्वरूप मैं घर से आपको एक बढ़िया पश्मीने की लोई भेजूंगा। पिता जी ने उन्हें कहा कि यह समझ कर भेजना कि उसके मूल्य का मनीआर्डर भी तुम्हारे पास पहुंच जायेगा। तब उन्होंने वह उपहार भेजने की हिम्मत नहीं की।

इन जेल-यात्राओं ने पिता जी को पहले से भी अधिक देशभक्त और गरीबों का सेवक बना दिया। वे अपनी कपड़े की दुकान लड़कों पर छोड़कर स्वयं होम्योपैथी की दवायें मुफ्त बांटकर सेवा का जीवन व्यतीत करने लगे। घर पर गो-सेवा और बाहर गरीबों की सेवा यही आपकी दिनचर्या हो गई। धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में आर्य समाज को ही पिता जी एकमात्र प्राश और स्फूर्ति देने वाली संस्था मानते थे। बालक-बालिकाओं की शिक्षा के लिये आर्य समाज की शिक्षा-संस्थाओं को ही चरित्र-निर्माण करने वाली संस्थाएं बता कर सैकड़ों लोगों से उनके बच्चों को उन्होंने गुरूकुलों में भिजवाया। आर्य समाज के महोत्सवों में जाकर पूरा समय वे पंडाल में बैठकर भाषण सुना करते थे। मथुरा-शताब्दी में उन्होंने स्वयं सेवक का कार्य भी किया। अन्याय और अत्याचार को न सहनेवाले व्यक्तियों में आपकी गशना होती थी। थानेदार आदि स्थानीय सरकारी अफसर आपकी बड़ी इज्जत करते थे और किसी हद तक आपसे डरते भी थे कि इनके कस्बे में यदि हमने कोई गलत काम किया तो हमारी शिकायत हो जायेगी।

अपनी आयु के अंतिम कुछ वर्ष पिता जी ने अपने सबसे छोटे पुत्र डाक्टर हरिश्चन्द्र के पास तिलहर में व्यतीत किये। आयु के 89 वर्ष पूर्णकर 4 मई 1981 को तिलहर (जिला शाहजहांपुर) में उन्होंने इहलोक लीला संवरश की। उनकी प्रार्थना सभा में ईसाई, मुसलमान, सिख, हिन्दू आदि सब धर्म के लोगों ने उपस्थित होकर अपने-अपने धर्मग्रन्थों का पाठ करके उन्हें श्रद्धांजलि दी। एक घास वाले ने कहा कि पिता जी हमसे गाय के लिए घास-चारा खरीदते थे। कभी मोल-भाव नहीं किया। हमसे कहते थे कि घास घर पर डाल आओ, पैसे पहले ही दे देते थे। पैसे सदा घास के मूल्य से कुछ अधिक ही होते थे। हमारे पास उनकी पवित्र स्मृति और उनके महान् गुण थाती के रूप में सुरक्षित हैं। संभव है कोई पाठक भी उनके जीवन से कुछ प्रेरणा पा सकें, इसी दृष्टि से इस छोटे से लेख के माध्यम से कुछ झांकियां प्रस्तुत की गई हैं।

प्रस्तुतकर्ताः मनमोहन कुमार आर्य,
पताः 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोनः 09412985121

श्री कृष्णचन्द पाहुजा प्रधान निर्वाचित

रविवार, 7 जुलाई 2013, आर्य समाज,प्रशान्त विहार,दिल्ली के चुनाव में श्री कृष्णचन्द पाहुजा-प्रधान,श्री ओमप्रकाश देवेश्वर-संरक्षक, श्री विजय कुमार अरोड़ा-उपप्रधान, श्री मनोहरलाल चुघ-मन्त्री व श्री महेन्द्रपाल अरोड़ा-कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये । युवा उद्घोष की ओर से बधाई व शुभकामनायें ।

बिहार प्रान्तीय आर्य युवा शिविर का भव्य शुभारम्भ

आर्य युवको सभाओं की दल गत राजनीति से ऊपर उठकर केवल देव दयानन्द का कार्य करो

समस्तीपुर। रविवार, 14 जुलाई 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् बिहार प्रदेश के तत्वावधान में ''युवा चरित्र निर्माण शिविर'' का आयोजन ड्रीम लैन्ड पब्लिक स्कूल, दिघरा, समस्तीपुर, बिहार में 21 जुलाई तक किया गया। शिविर में 281 युवा प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। समारोह के मुख्य अतिथि डा.चिरजींवी राय ने कहा कि चरित्र निर्माण शिविर युवाओं के जीवन में मील का पत्थर साबित होते हैं यहां का सीखा हुआ सारी आयु काम आता है। समारोह की अध्यक्षता शिक्षाविद श्री राजीव कुमार शर्मा ने की। संचालन श्री सौरभ गुप्ता ने किया। इस अवसर पर श्री जे.पी.सिंह,आचार्य चन्द्रमित्र, भारतेन्दु कुमार, सुरेशप्रसाद आर्य, नत्थु साह, कौशल किशोर, रमेश प्रकाश, नरेश प्रकाश, रामगणेश ठाकुर, जी.एस.राय, चन्दन कुमार वरूण आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्र मित्रा जी व सामने यज्ञ करते प्रबुद्धआर्य जन

सोनीपत में आर्य कन्या प्रशिक्षण शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न

वेद प्रचार करने व युवा निर्माण के लिए किसी के ''लाईसेन्स'' की आवश्यकता नहीं है

सोनीपत। रविवार, 9 जून 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में ''आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर'' का आयोजन जैन विद्या मन्दिर,सोनीपत में किया गया। शिविर में 125 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य को सम्मानित करते श्री मनोहरलाल चावला, श्री हरिचन्द स्नेही, श्री गुलशनलाल निझावन, मुनि वेदपाल आर्य व वीरेन्द्र योगाचार्य आदि।

जम्मू में युवक शिविर सम्पन्न : आर्यो जहां परिषद् है वहां उत्साह है

रविवार, 30 जून 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में शिविर समापन से पूर्व श्री सुभाष बब्बर (प्रान्तीय अध्यक्ष) के नेतृत्व में जानीपुर कालोनी में भव्य शोभायात्रा निकाली गई, साथ में नारे लगाते हुए श्री रामकुमार सिंह(दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष), श्री महेन्द्र भाई(राष्ट्रीय महामंत्री), श्री रमेश कुमार, मुकेश मैनी आदि।

जीन्द में युवक शिविर का भव्य समापन : दयानन्द की सेना तैयार हो रही है

हरियाणा के प्रसिद्ध शहर जीन्द में दिनांक 5 मई से 12 मई 2013 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में ''युवक चरित्र निर्माण शिविर'' का भव्य आयोजन किया गया। शिविर में 150 युवको ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विजेता युवकों के साथ श्री सूर्यदेव व्यायामाचार्य, श्री योगेन्द्र शास्त्री (संयोजक), श्री महेन्द्र भाई,श्री रामकुमार सिंह, आचार्य सुखदेव तपस्वी, श्री मनोहरलाल चावला,श्री ईश्वरसिंह आर्य आदि।

बहरोड़ राजस्थान में युवक शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् राजस्थान के तत्वावधान में बहरोड़ में विशाल युवक चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन श्री रामकृष्ण शास्त्री के नेतृत्व में किया गया, जिसमें 250 युवक प्रशिक्षित हुए ।बायें पुरस्कृत बच्चे प्रसन्न मुद्रा में व दायें स्तूप बनाते आर्य युवक।

करनाल में आर्य युवक शिविर ने छोड़ी अपनी अमिट छाप

रविवार, 23 जून 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् करनाल के तत्वावधान में ''आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर'' का आयोजन आर्य समाज,प्रेम नगर,करनाल में किया गया । शिविर में 125 युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । मुख्य अतिथि को सम्मानित करते श्री महेन्द्र भाई, श्री मनोहरलाल चावला,श्री हरेन्द्र चौधरी,श्री स्वतन्त्र कुकरेजा,रामकुमार सिंह,रोशन आर्य,अजय आर्य व श्री हरबन्सलाल अरोड़ा । द्वितीय चित्र में योगेन्द्र शास्त्री लाठी से बचाव करते हुए।

युवा संस्कार अभियानः 11 अगस्त से 18 अगस्त तक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने दिनांक 11 अगस्त से 18 अगस्त 2013 तक श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में ''युवा संस्कार अभिमान'' चलाने का निश्चय किया है। गत वर्ष 8 दिन में 38 कार्यक्रम हुए थे।

कृपया इस कार्यक्रम में ध्यान दें।

(1) आयु वर्ग 12 वर्ष से 25 वर्ष तक युवक/युवातियां रहेगा। (2) रूपरेखा: प्रत्येक स्थान पर 2 घंटे का कार्यक्रम रहेगा। जिसमें आधा घंटा यज्ञ, आधा घंटा भजन, प्रवचन एवम् यज्ञोपवीत संस्कार एवम् जिन शाखाओं में शिविर से प्रशिक्षित आर्य युवक हैं वहां पर 15-20 मिनट का ''व्यायाम प्रदर्शन'' भी रखा जायेगा। (3) अन्त में प्रसाद वितरण सम्पन्न होगा। यज्ञ का इतना महंगा न करें। इस बात का विशेष ध्यान रखें जिससे हर व्यक्ति 'यज्ञ' करवा सकें। (4) यदि किसी दानी या आर्य समाज के सहयोग से कुछ साहित्य वितरण हो सके तो उत्तम रहेगा। (5) सभी 'दीक्षित' युवको से आवेदन पत्र भरवाया जाए। जिसमें वह प्रतिज्ञा करें कि अंडा, मांस व नशा से दूर रहेंगें। **अपने क्षेत्र का कार्यक्रम निश्चित करके कृपया शीघ्र सूचित करें।**

डॉ. अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
मो. 9810117464, 9868051444, 27653604

शोक : विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री जयगोपाल मलिक नहीं रहे प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जयगोपाल मलिक (भाई श्रीमती सुदर्शन खन्ना) ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली का गत् 20 जून 2013 को निधन हो गया। उनके निधन से देश व समाज की अपार क्षति हुई है।
2. श्री रामचन्द आर्य आयु 94 वर्ष (पिता श्री कन्हैयालाल आर्य, गुड़गांव) का गत् दिनों निधन हो गया।
3. श्री भारत आर्य आयु-25 वर्ष (सुपुत्र श्री सोमदेव आर्य, फरीदाबाद) का गत दिनों सड़क दुर्घटना में निधन हो गया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की विनम्र श्रद्धाजंलि।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970